शीला गहलावत 'सीरत'

चंडीगढ़

मानव की पहचान

सत कर्मों से बनती जग में,मानव की पहचान ।

किस चक्कर में पड़ा हुआ है,अब तक तू नादान ।।

मस्त हवा के झोंकों से यह ,नाच रहा मन मोर ।

कब होती है संध्या जाने , कब होती है भोर।

प्रेमानंद में डूब के ही , मिलता ईश्वर - ज्ञान।।

सत कर्मों.....

मन के मन्दिर में खुश हो कर, है दिव्या अभिसार

चोटी की अनछुई बर्फ से, हो जाता है प्यार

चंचल नदियांॅ ताल-तलैया, गाते उसका गान

सत कर्मों.....

बगिया में अनंत पुष्पों के, वट है खिले अपार

धरती अम्बर क्या है सब पर,उसका है अधिकार ।

सीरत को भी आठों पहर अब , रहता उसका ध्यान।।

सत कर्मों.....